# अध्याय –4

## सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र

सन् 1991 में सोवियत संघ के विघटन से दुनियॉ में दो ध्रुवीय व्यवस्था समाप्त हो गयी। अमेरिकी वर्चस्व की शुरूआत सोवियत संघ के अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य से हटने की वजह से हुई । और यह स्पष्ट हो गया कि राजनैतिक और आर्थिक सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र कुछ हद तक अमरीका के प्रभुत्व को कम कर देंगे । यूरोपीय संघ और आसियान (दक्षिण पूर्व एशियाई देशों का संगठन) को अमेरिकी वर्चस्व को चुनौती देने वाले वैकल्पिक केन्द्रों के रूप में देखा जा रहा है। साथ ही चीन के आर्थिक उभार ने विश्व राजनीति पर नाटकीय प्रभाव डाला।इस अध्याय में हम सत्ता के उभरते वैकल्पिक केन्द्रों और भविष्य में उनकी भूमिका पर नजर डालेंगे।

## यूरोपीय संघ

मुख्यतः यूरोप में स्थित 28 देशों का एक राजनैतिक एवं आर्थिक मंच है।जिनमें आपस में प्रशासकीय साझेदारी है। जो संघ के कई या सभी राष्ट्रों पर लागू होती है।इसका अभ्युदय 1957 में रोम की संधि द्वारा यूरोपीय आर्थिक परिषद के माध्यम से छः यूरोपीय देशों की आर्थिक भागीदारी से हुआ था।तब से इसमें सदस्य देशों की संख्या में लगातार बढोत्तरी होती रही है।1992 में मास्त्रिख संधि द्वारा इसके आधुनिक स्वरूप की नीव रखी गयीं ।

राष्ट्र वाक्य – यूनिटी इन डाइवर्सिटी

राजनीतिक केन्द्र(मुख्यालय) – ब्रुसेल्स

सदस्य – 28

मुद्रा – यूरो

स्थापना – 7 फरवरी 1992

## महत्वपूर्ण बिंदु–

1. द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति 1945 तक यूरोपीय देशों ने अपनी अर्थव्यवस्थाओं की बर्बादी झेली।
2. 1945 के बाद यूरोप के देशों में मेल मिलाप को शीत युद्ध से भी मदद मिली।
3. **मार्शल योजना** –अमरीका ने यूरोप की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के लिए जबरदस्त मदद की ।इसे मार्शल योजना के नाम से जाना जाता है।
4. अमेरिका ने नाटो के तहत एक सामूहिक सुरक्षा व्यवस्थ को जन्म दिया।
5. मार्शल योजना के तहत ही 1948 में 'यूरोपीय आर्थिक सहयोग संगठन' की स्थापना की गयी।
6. 1949 में 'यूरोपीय परिषद' का गठन हुआ।
7. 1957 में 'यूरोयिन इकॉनोमिक कम्युनिटी' का गठन हुआ।
8. यूरोपियन पार्लियामेंट के गठन के बाद इस प्रक्रिया ने राजनीतिक स्वरूप प्राप्त कर लिया।सोवियत गुट के पतन के बाद इस प्रक्रिया में तेजी आई और 1992 में इस प्रक्रिया की परिणति यूरोपीय संघ की स्थापना के रूप में हुई।
9. यूरोपीय संघ के रूप में समान विदेश और सुरक्षा नीति ,आंतरिक मामलों तथा न्याय से जुडे मुद्दों पर सहयोग और एकसमान मुद्रा के चलन के लिए रास्ता तैयार हो गया।
10. यूरोपीय संघ की एक संविधान बनाने की कोशिश असफल रही।
11. यूरोपीय संघ के झंडे में सुनहरे रंग के 12 सितारे घेरे में हैं जो वहाँ के लोंगों की एकता और मेल–मिलाप के प्रतीक हैं।
12. 2005 में यह दुनियॉ की सबसे बडी अर्थव्यवस्था थी।
13. यूरोपीय संघ के दो सदस्य देश ब्रिटेन और फ्रांस सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं।
14. सैनिक ताकत के हिसाब से यूरोपीय संघ के पास दुनियाँ की दूसरी सबसे बडी सेना है।
15. इसका कुल रक्षा बजट अमरीका के बाद सबसे अधिक है।
16. यूरोपीय संघ के दो देशों ब्रिटेन और फ्रांस के पास परमाणु हथियार हैं।(लगभग 550)
17. अंतरिक्ष विज्ञान और संचार प्रौद्योगिकी के मामले में भी यूरोपीय संघ का दुनियाँ में दूसरा स्थान हैं।

18.ब्रिटेन,स्वीडेन व डेनमार्क यूरो मुद्रा संघ के सदस्य नहीं हैं।

## दक्षिण पूर्वी एशियाई राष्ट्रों का संगठन (आसियान)

राष्ट्रवाक्य– एक दृष्टि, एक पहचान, एक समुदाय

स्थापना– 8 अगस्त 1967,बैंकाक

मुख्यालय–जकार्ता(इंडोनेशिया)

झण्डा–दस धान की बालियाँ

सदस्य देश–10 (ब्रुनेई, कम्बोडिया,इंडोनेशिया,लाओस,मलेशिया,म्यामार,फिलीपींस,सिंगापुर,थाईलैंड,वियतनाम)

**आसियान प्लस तीन**–एक ऐसा मंच है जो आसियान के सदस्य देशों तथा तीन पूर्वी एशियाई देशों चीन,जापान,तथा दक्षिणी कोरिया के मध्य समन्वय का कार्य करता है।

महत्वपूर्ण बिंदु–

1. 1967 में इस क्षेत्र के पाँच देशों ने बैंकाक घोषणा पर हस्ताक्षर करके आसियान की स्थापना की।ये देश थे–इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस,सिंगापुर,थाईलैंड।
2. इसका प्रमुख उद्देश्य आर्थिक विकास को तेज करना और उसके माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक विकास हासिल करना था।
3. **आसियान शैली**– अनौपचारिक, टकराव रहित, और सहयोगात्मक मेल मिलाप का नया उदाहरण पेश करके आसियान ने काफी यश कमाया है। इसको ही आसियान शैली कहा जाने लगा है।
4. आसियान के देशों की सुरक्षा और विदेश नीतियों में तालमेल बनाने के लिए 1994 में आसियान मंच की स्थापना की गयी।
5. 2003 में आसियान ने आसियान सुरक्षा परिषद,आसियान आर्थिक समुदाय और आसियान सामाजिक–सांस्कृतिक समुदाय नामक तीन

स्तम्भों के आधार पर आसियान समुदाय बनाने की दिशा में कदम उठाए।

6. आसियान सुरक्षा समुदाय क्षेत्रीय विवादों को सैनिक टकराव तक न ले जाने की सहमति पर आधारित है।
7. आसियान क्षेत्र की कुल अर्थव्यवस्था अमरीका, यूरोपीय संघ और जापान की तुलना में काफी कम है परन्तु इसका विकास इन सबसे अधिक तेजी से हो रहा है।
8. **आसियान विजन दस्तावेज 2020** के प्रमुख बिंदु–

   1. अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में आसियान की एक बहिर्मुखी भूमिका को प्रमुखता दी गई हैं।
   2. टकराव के स्थान पर बातचीत को बढावा देने की बात कही गई है।
   3. क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण,वित्तीय सहयोग, एवं व्यापार उदारीकरण के विभिन्न उपायों पर बल दिया गया है।

भारत ने 1991 में 'पूरब की ओर चलो' की नीति अपनाई ।इससे पूर्वी एशिया के देशों से उसके आर्थिक संबन्धों में बढोत्तरी हुई।

## चीनी अर्थव्यवस्था का उत्थान–

1. आर्थिक सुधारों की शुरूआत करने के बाद से चीन सबसे ज्यादा तेजी से आर्थिक वृद्धि कर रहा है। और माना जाता है कि इस गति से चलते हुए 2040 तक वह दुनियाँ की सबसे बडी आर्थिक शक्ति, अमेरिका से भी आगे निकल जायेगा।
2. 1949 में माओ के नेतृत्व में हुई साम्यवादी क्रान्ति के बाद चीनी जनवादी गणराज्य के समय यहाँ की आर्थिकी सोवियत मॉडल पर आधारित थी।
3. आर्थिक रूप से पिछडे साम्यवादी चीन ने पूँजीवादी दुनियाँ से अपने रिश्ते तोड लिए।

4. चीन ने विकास का जो मॉडल अपनाया उसमें खेती से पूँजी निकालकर सरकारी नियंत्रण में बडे उद्योग खडे करने पर था। शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में चीन विकसित देशों से भी आगे निकल गया था। विकास भी 5–6 फीसदी की दर से हुआ, परन्तु जनसंख्या में 2–3 फीसदी वार्षिक वृद्धि इस विकास दर पर पानी फेर रही थी।
5. चीनी नेतृत्व ने 1970 के दशक में कुछ बडे नीतिगत निर्णय लिये।चीन ने 1972 में अमरीका से संबन्ध बनाकर अपने रानीतिक और आर्थिक एकांतवास को समाप्त किया।
6. 1978 में तत्कालीन नेता देंग श्याओपेंग ने चीन में आर्थिक सुधारों और खुले द्वार की नीति की घोषणा की।
7. चीन ने शाक थेरेपी पर अमल करने के बजाय अपनी अर्थव्यवस्था को चरणबद्ध ढंग से खोला।
8. 1982 में खेती का निजीकरण किया।
9. 1998 में उद्योगों का निजीकरण किया।
10. व्यापार के नए कानून तथा विशेष आर्थिक क्षेत्रों (**special economic zone** ) SEZ के निर्माण से विदेश व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
11. 2001 में चीन विश्व व्यापार संगठन में शामिल हुआ।
12. 1997 के वित्तीय संकट के बाद आसियान देशों की अर्थव्यवस्था को टिकाए रखने में चीन के आर्थिक उभार ने काफी मदद की।लातिनी अमेरिका और अफ्रीकी देशों में निवेश और मदद की इसकी नीतियाँ बताती हैं कि विकासशील देशों के मामले में चीन एक नई विश्व शक्ति के रूप में उभर रहा है।

## चीन के साथ भारत के विदेश संबन्ध–

1. अंग्रेजी राज से भारत के आजाद होने और चीन द्वारा विदेशी शक्तियों को निकाल बाहर करने के बाद यह उम्मीद जगी थी कि ये दोनों मुल्क साथ आकर विकासशील दुनियाँ और खास तौर से एशिया के भविष्य को तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।
2. सीमा विवाद पर चले सैन्य संघर्ष ने इस उम्मीद को समाप्त कर दिया।

3. आजादी के बाद 1950 में चीन द्वारा तिब्बत को हडपने तथा भारत–चीन सीमा पर बस्तियाँ बनाने के फैसले से दोनों देशों के बीच संबन्ध खराब हो गये।
4. 1962 में भारत चीन युद्ध हुआ और भारत को सैन्य पराजय झेलनी पडी।1976 तक दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबन्ध समाप्त ही रहे।
5. 1970 के दशक में भारत चीन संबन्धों में कुछ सुधार हुआ। 1981 में सीमा विवादों को दूर करने के लिए वार्ताओं की श्रृंखला भी शुरू हुई।
6. दिसंबर 1988 में राजीव गाँधी द्वारा चीन का दौरा करने से भारत–चीन संबन्धों को सुधारने के प्रयोगों को बढावा मिला।
7. 1999 से भारत और चीन के बीच व्यापार 30 फीसदी सालाना की दर से बढ रहा है, इससे चीन के साथ संबन्धों में गर्मजोशी आई है।
8. चीन और भारत के अधिकारी अक्सर नई दिल्ली व बीजिंग का दौरा करते हैं, इससे दोनों देश एक–दूसरे को करीब से समझने लगे हैं।
9. हाल ही में भारत–चीन के बीच डोकलाम संकट गहराने लगा है। इस मामले पर दोनों देशों की सेनायें आमने–सामने आ गयी थी।

## प्रश्नावली–

1. आसियान विजन–2020 की मुख्य बातें क्या हैं?
2. यूरोपीय संघ को क्या चीजें एक प्रभावी क्षेत्रीय संगठन बनाती हैं?
3. क्षेत्रीय संगठनों के बनाने के क्या उद्देश्य हैं?
4. आसियान समुदाय के मुख्य स्तम्भों और उनके उद्देश्यों के बारे में बतायें।
5. आसियान शैली क्या है?

संदर्भ–1. एन.सी.ई.आर.टी. राजनीति विज्ञान, कक्षा–12, 2. विकीपीडिया

धीरज सिंह खडायत
प्रवक्ता (राजनीति विज्ञान)
राजकीय इंटरमीडिएट कालेज मस्मोली(पिथौरागढ)

.